SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter

“सीख, सहयोग और संरचना
एक मजबूत नींव का महीना”

अगस्त 2026

रालेगण सिद्धि एवं अन्ना हजारे से संवाद:
दल ने समाजसेवी अन्ना हजारे के गाँव रालेगण सिद्धि का भ्रमण कर निसर्ग परिचय केंद्र, ग्राम पंचायत व संग्रहालय देखा और अनुशासन, श्रमदान व सामूहिक सहभागिता से गाँव के कायाकल्प की सीख ली।

हिवरे बाजार में सीखे ग्राम विकास के गुण:
“आनंदी कुटुंब से समृद्ध ग्राम” कार्यशाला में “संकल्प एक प्रयास” के प्रतिनिधियों ने ली प्रेरणा

हिवरे बाजार (महाराष्ट्र) ➧ दुर्ग (छत्तीसगढ़):

ग्रामीण विकास, शिक्षा और सामुदायिक सशक्तिकरण को नई दिशा देने के उद्देश्य से महाराष्ट्र के ऐतिहासिक हिवरे बाजार में 18 से 23 अगस्त 2026 तक छह दिवसीय "आनंदी कुटुंब समृद्ध ग्राम" प्रशिक्षण एवं अनुभव भ्रमण (Exposure Visit) का आयोजन किया गया। Sankalp Ek Prayas Society की ओर से इस विशेष कार्यशाला में संस्था की ओर से तुकाराम साहू के नेतृत्व में आदर्श बाल ग्राम फेलोज़—विनीता वर्मा, रितु साहू, देवकी पटेल, गोमती साहू और प्रेमांजली ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण विकास को केवल आर्थिक या भौतिक इंफ्रास्ट्रक्चर तक सीमित न मानकर "व्यक्ति परिवार समुदाय ग्राम" के आपसी संबंधों, आपसी विश्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और प्राकृतिक संसाधनों के एकीकृत विकास की अवधारणा को समझना था।

प्रशिक्षण एवं अनुभव भ्रमण के प्रमुख आकर्षण

हिवरे बाजार का प्रेरक मॉडल:
पद्मश्री पोपटराव पवार के मार्गदर्शन में प्रतिनिधियों ने समझा कि कैसे 35 वर्षों के निरंतर सामुदायिक प्रयास, अनुशासन, जल-संरक्षण और पारदर्शी नेतृत्व से हिवरे बाजार ने एक आदर्श आत्मनिर्भर गाँव का रूप लिया। गाँव में बिना बोरवेल के कुओं के जल-प्रबंधन, कम पानी वाली फसलों की खेती और 10 लाख से अधिक वृक्षारोपण जैसे ऐतिहासिक कार्यों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

महिला नेतृत्व एवं स्वावलंबन:
सुवर्णा गोखले ताई व अन्य विशेषज्ञों के सत्रों के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्वावलंबन, स्थानीय हस्तकला, स्वरोजगार, ग्राम सभाओं में भागीदारी और बच्चों के शुरुआती विकास (ECCE) में भूमिका पर जोर दिया गया।

शिक्षा और गुड पैरेंटिंग (Good Parenting):
दत्तात्रेय वारे गुरुजी और सुशांत कालरा के सत्रों में शिक्षा को केवल किताबों तक सीमित न रखकर 21st Century Skills (सृजनात्मकता, समस्या-समाधान, संवाद) और सोशल-इमोशनल लर्निंग (SEL) से जोड़ने की बात कही गई। Quality Circle Time (QCT) के माध्यम से अभिभावकों और बच्चों के बीच बेहतर भावनात्मक जुड़ाव पर चर्चा हुई।

प्राकृतिक कृषि एवं पर्यावरण:
पद्मश्री सुभाष दादा शर्मा, श्रीराम नरसिम्हन, उम्मेद नाहटा और योगेश शास्त्री जैसे विशेषज्ञों ने मानव सभ्यता के इतिहास, प्राकृतिक खेती, जल-मृदा संरक्षण और संतुलित जीवन-मूल्यों (Human Values) पर मार्गदर्शन दिया।

| मुख्य आयाम और क्षेत्रीय अनुप्रयोग (छत्तीसगढ़ के संदर्भ में) |

आयाम	प्रशिक्षण एवं भ्रमण से प्राप्त सीख	छत्तीसगढ़ के गाँवों में अनुप्रयोग की योजना
शिक्षा	शिक्षा सोच, व्यवहार और जीवन-कौशल विकसित करने का जरिया है।	LRC केंद्रों में कला, खेल, विज्ञान, पुस्तकालय और EVS मॉडल से पढ़ाई को जीवन से जोड़ना; ड्रॉपआउट बच्चों को पुनः जोड़ना
स्वास्थ्य एवं स्वच्छता	शारीरिक स्वास्थ्य के साथ स्वच्छता, पोषण और मानसिक कल्याण का जुड़ाव।	किशोरियों व महिलाओं के बीच स्वास्थ्य व स्वच्छता जागरूकता अभियान; बच्चों में स्वच्छ आदतों का विकास।
उत्पादन व आजीविका	स्थानीय संसाधनों व कौशल से स्थायी आजीविका का निर्माण।	स्थानीय हस्तकला, कृषि व कौशल पहचानकर महिलाओं को स्वरोजगार और बाजार से जोड़ना
न्याय एवं समानता	सभी के लिए सुरक्षित, सम्मानजनक और समान अवसर का माहौल	बच्चों व किशोरियों के साथ अधिकार, सुरक्षा और समानता पर संवाद; गरिमा परियोजना को मजबूत करना।
पर्यावरण व जल संरक्षण	जल, भूमि और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग।	VLEC व ग्राम सभा के माध्यम से जल-संरक्षण, पौधरोपण और साइंस मेला हेतु मॉडल निर्माण। |

| आगे की राह: "एक्सपोजर से एक्शन" की ओर |

छह दिवसीय इस गहन प्रशिक्षण के बाद प्रतिनिधियों ने संकल्प लिया कि वे हिवरे बाजार से प्राप्त सीख को छत्तीसगढ़ के दुर्ग, राजनांदगांव, धमतरी, बालोद और बेमेतरा जिलों के गाँवों में लागू करेंगे।

'आदर्श बाल ग्राम' की परिकल्पना को साकार करने के लिए लर्निंग रिसोर्स सेंटर्स (LRC) के माध्यम से बच्चों, माताओं, VLEC (ग्राम स्तरीय शिक्षा समिति) और ग्राम पंचायतों को एक साथ जोड़कर सामुदायिक स्वामित्व (Community Ownership) स्थापित किया जाएगा, जिससे खुशहाल परिवार और समृद्ध ग्राम का निर्माण संभव हो सके।

राजनांदगांव और दुर्ग जिले के आंगनवाड़ी केंद्रों में 'गरिमा परियोजना' का विस्तार:

खेल-खेल में संवरेगा नौनिहालों का बचपन

राजनांदगांव / दुर्ग , बच्चों के सुरक्षित, आनंदमय और समृद्ध भविष्य की नींव मजबूत करने की दिशा में 'संकल्प एक प्रयास' (SEP) संस्था ने एक सराहनीय पहल की है। संस्था द्वारा संचालित 'गरिमा परियोजना' का दायरा बढ़ाते हुए अब राजनांदगांव और दुर्ग जिले के चयनित गांवों के कुल 56 आंगनवाड़ी केंद्रों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) गतिविधियों की विधिवत शुरुआत की जा रही है।

इस महत्वाकांक्षी योजना के अंतर्गत राजनांदगांव जिले के 3 0 आंगनवाड़ी केंद्रों और दुर्ग जिले के 26 आंगनवाड़ी केंद्रों में गतिविधियों के संचालन की प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। राजनांदगांव में परियोजना अधिकारी शिल्पा तिवारी मैंम से स्वीकृति पत्र प्राप्त करने के साथ-साथ, दुर्ग जिले में विभागीय अधिकारी श्री आर. के. जंबूलेकर सर द्वारा 23 केंद्रों के लिए अनुमति प्रदान की गई है। टीम कोऑर्डिनेटर खुशबू मैम और उनकी टीम के फेलो मालती , ABG फेलो अल्का इनके प्रयासों से अब गरिमा फेलो, स्थानीय आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी गतिविधियां संचालित करेंगी।

खेल-खेल में सीखेंगे बच्चे, मजबूत होगी नींव

इस पहल का मुख्य उद्देश्य 3 से 6 वर्ष की आयु के नन्हें-मुन्नों के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को सही दिशा देना है, ताकि वे प्राथमिक शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हो सकें। रटंत प्रणाली के बजाय खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्ययोजना बनाई गई है:

कौशल विकास
बच्चों में भाषा ज्ञान, पूर्व-गणितीय समझ, संज्ञानात्मक विकास और शारीरिक व गत्यात्मक कौशलों को निखारा जाएगा।

रोचक गतिविधियां
कहानियों, समूह खेलों, रचनात्मक कार्यों और संवाद के जरिए एक सुरक्षित और बाल-केंद्रित माहौल तैयार किया जाएगा।

स्कूल रेडीनेस
बच्चों में आत्मविश्वास और सामाजिक व्यवहार का निर्माण कर उन्हें स्कूल जाने के लिए मानसिक रूप से तैयार (School Readiness) किया जाएगा।

अभिभावकों की सहभागिता और सुरक्षा के उच्च मानक

कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए बच्चों की दैनिक उपस्थिति, सहभागिता और सीखने की प्रगति का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखा जाएगा। साथ ही, अभिभावकों को प्रारंभिक बाल शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करने का अभियान भी चलाया जाएगा।

यह पूरी कार्ययोजना आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के समन्वय से संचालित होगी, जिससे नियमित सेवाओं में कोई बाधा न आए। संस्था ने स्पष्ट किया है कि गतिविधियों के दौरान बाल सुरक्षा, संरक्षण, समानता और समावेशन के सभी उच्च मानकों का कड़ाई से पालन किया जाएगा। 'संकल्प एक प्रयास' के खुशबू मैम व टीम की इस साझा पहल से दोनों जिलों के ग्रामीण बच्चों के लिए सीखने के नए और खुशहाल दरवाजे खुलने जा रहे हैं।

ब्लैकबोर्ड से परे “किचन केमिस्ट्री”:

25 सरल प्रयोगों से ग्रामीण बच्चों के लिए आसान बनेगा रसायन विज्ञान

ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर रसायन विज्ञान (केमिस्ट्री) को एक कठिन, शुष्क और केवल याद करने वाला विषय माना जाता है। महंगी लैब और संसाधनों के अभाव में बच्चे समीकरणों और सूत्रों के जाल में उलझकर रह जाते हैं। लेकिन इस धारणा को बदलते हुए दो दिवसीय विशेष 'गतिविधि-आधारित रसायन विज्ञान प्रशिक्षण' (Activity-Based Chemistry Training) का सफल आयोजन 'संकल्प एक प्रयास' द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य रसायन विज्ञान को ब्लैकबोर्ड की सीमाओं से निकालकर 'स्वयं करके सीखो' (Hands-on Learning) की पद्धति से बच्चों के दिल और दिमाग तक पहुँचाना है।

“जब हाथों से करते हैं, तो दिमाग में सदा के लिए छप जाता है”

प्रशिक्षण के मुख्य प्रशिक्षक श्री राजीव वर्तक सर जी, ने व्यावहारिक शिक्षण के महत्व पर जोर देते हुए, रसायन विज्ञान की जटिल बारीकियों को स्वयं प्रयोग करके दिखाया। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि "जब बच्चे किसी प्रयोग को स्वयं अपने हाथों से करते हैं, तो वह अनुभव उनकी स्मृति पटल पर सदैव के लिए अंकित हो जाता है।" राजीव सर जी ने फेलोस को सिखाया कि कैसे बिना किसी महंगी लैब के, केवल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध और कम लागत वाली सामग्रियों से सुरक्षित एवं प्रभावी प्रयोग किए जा सकते हैं।

25 प्रयोगात्मक गतिविधियों से जीवंत हुआ विज्ञान

दो दिनों के इस सघन अभ्यास में शिक्षकों ने लगभग 25 प्रमुख प्रयोगात्मक गतिविधियों का प्रत्यक्ष अभ्यास किया। इनमें दैनिक जीवन और पाठ्यक्रम से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषय शामिल थे:

अम्ल और क्षार की पहचान

घरेलू व स्थानीय पदार्थों से अम्ल-क्षार के अंतर को समझना तथा ब्रोंस्टेड-लोरी सिद्धांत को सरल बनाना।

गैसों का निर्माण व गुण

कैल्शियम कार्बोनेट और HCl से CO_2 बनाना, $KMnO_4$ से ऑक्सीजन तथा अमोनिया व हाइड्रोजन गैसों के ज्वलनशील व अन्य गुणों का प्रदर्शन।

रोचक व आश्चर्यजनक प्रयोग

'बोतल फाउंटेन', अमोनिया फाउंटेन, 'बोतल में आग का प्रयोग' और सोडियम हाइड्रॉक्साइड फ्लास्क वार्मर।

रासायनिक एवं भौतिक परिवर्तन

ऊष्माशोषी अभिक्रियाएँ, कॉपर सल्फेट और NaCl घोल का विद्युत अपघटन, मैग्नीशियम रिबन का दहन, तथा शुद्ध कोयला बनाने की प्रक्रिया।

प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ाव

मिट्टी की जल धारण क्षमता, प्रकाश संश्लेषण की गतिविधि तथा पदार्थों के कणों के आकार व रंग का अवलोकन।

फेलोस की भूमिका में बड़ा बदलाव:
“बताने वाले” से “मार्गदर्शक” तक

इस प्रशिक्षण ने फेलोस के दृष्टिकोण में एक बड़ा सकारात्मक परिवर्तन लाया है। फेलोस ने माना कि अब उनकी भूमिका केवल एक व्याख्यान देने वाले (Lecturer) की नहीं, बल्कि बच्चों को खोज और प्रयोग की दिशा में ले जाने वाले एक 'मार्गदर्शक' (Facilitator) की होगी।

डिजिटल टूल्स और गतिविधियों के इस सुंदर समन्वय से ग्रामीण कक्षाओं का माहौल अधिक सक्रिय, बाल-केंद्रित और जीवंत बनेगा। डिजिटल माध्यमों से जहाँ अदृश्य प्रक्रियाओं को विजुअलाइज़ (दृश्य रूप में प्रस्तुत) किया जाएगा, वहीं स्थानीय सामग्री से बने मॉडल बच्चों के मन से विज्ञान के डर को खत्म कर उनमें आत्मविश्वास और जिज्ञासा का संचार करेंगे।

SANKALP
Empowering Dreams, Building Future

सीधे कक्षाओं में पहुँचेगा प्रयोग का जादू

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद, प्रतिभागी फेलोस ने संकल्प लिया है कि वे अपने-अपने केंद्रों और विद्यालयों में जाकर सबसे पहले अम्ल-क्षार परीक्षण, बोतल फाउंटेन, CO_2 निर्माण और विद्युत अपघटन जैसे सुलभ प्रयोगों को लागू करेंगे।

इस दो दिवसीय कार्यशाला का अंतिम संदेश यही रहा कि " विज्ञान सिखाने के लिए बड़े बजट से ज्यादा बड़े दृष्टिकोण और सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।" स्थानीय संसाधनों, डिजिटल टूल्स और राजीव वर्तक सर जैसे कुशल मार्गदर्शकों की प्रेरणा से अब ग्रामीण अंचल के बच्चे भी रसायन विज्ञान को रटने के बजाय 'अनुभव करके' सीखेंगे।

भविष्य के निर्माताओं का संगम:

यूनिसेफ और 'संकल्प एक प्रयास' की साझा पहल से बदलेगी ग्रामीण भारत की तस्वीर

उतई (छत्तीसगढ़):

बच्चों का सर्वांगीण विकास केवल किताबों और कक्षाओं की दीवारों तक सीमित नहीं रह सकता। उनका स्वास्थ्य, स्वच्छता, सुरक्षित पेयजल, माहवारी स्वच्छता प्रबंधन (MHM) और बाल संरक्षण जैसे विषय भी उतने ही बुनियादी और महत्वपूर्ण हैं। इसी सोच को धरातल पर उतारने और ग्रामीण भारत की व्यावहारिक चुनौतियों को समझने के उद्देश्य से 12 अगस्त 2026 को 'संकल्प एक प्रयास' समिति के उतई स्थित कार्यालय में एक विशेष ज्ञान-साझाकरण सत्र (Knowledge Sharing Session) आयोजित किया गया।

इस बैठक में यूनिसेफ (UNICEF) की विशेषज्ञ टीम, 'संकल्प एक प्रयास' संस्था के प्रतिनिधियों और आदर्श बाल ग्राम (ABG) फेलो ने एक साथ आकर विचारों का आदान-प्रदान किया।

अनुभवों का आदान-प्रदान और जमीनी हकीकत

सत्र की शुरुआत दोनों टीमों के औपचारिक परिचय के साथ हुई। 'संकल्प एक प्रयास' की ओर से कार्यक्रम प्रबंधक श्री अभिषेक सर , प्रोजेक्ट समन्वयक श्रीमति वंदना मैम और सभी एबीजी फेलोज ने भाग लिया। उन्होंने संस्था की विकास-यात्रा, 'सीख', 'सृजन' व 'गरिमा' परियोजनाओं और 'आदर्श बाल ग्राम' मॉडल के विजन को साझा किया। वहीं, यूनिसेफ की विशेषज्ञ टीम से:

सुश्री चेतना देसाई- (विशेषज्ञ)
सुश्री श्वेता - (WASH - जल, स्वच्छता एवं प्लास्टिक कचरा प्रबंधन विशेषज्ञ)
श्री पुरुषोत्तम- (पुलिस प्रशासन एवं बाल संरक्षण विशेषज्ञ)

सभी विशेषज्ञों ने अपने-अपने क्षेत्रों के दीर्घकालिक अनुभव और जमीनी अवलोकन प्रस्तुत किए।

माहवारी स्वच्छता (MHM) और झिझक तोड़ती आवाजें

'गरिमा कार्यक्रम' के तहत ग्रामीण क्षेत्रों और सरकारी स्कूलों में सामने आने वाली व्यावहारिक समस्याओं पर गहराई से मंथन हुआ। फेलो ने बताया कि ग्रामीण बच्चे अपनी व्यक्तिगत, भावनात्मक या सामाजिक समस्याओं को खुलकर साझा करने में झिझकते हैं, जिससे समय पर मदद पहुंचाना कठिन हो जाता है।

इसके अलावा, माहवारी स्वच्छता प्रबंधन (MHM) से जुड़ी मुख्य चुनौतियां रेखांकित की गई:

सामाजिक सोच व हिचकिचाहट

कई अभिभावक आज भी किशोरियों को सेनेटरी पैड उपलब्ध कराने या उनके उपयोग का समर्थन करने में संकोच करते हैं।

स्कूलों में बुनियादी ढांचे की कमी

अधिका ग्रामीण स्कूलों में बालक-बालिकाओं के लिए पृथक, स्वच्छ और कार्यशील शौचालयों का अभाव है। जल आपूर्ति और इस्तेमाल किए गए पैड के सुरक्षित निपटान (Disposal) की समुचित व्यवस्था न होना बड़ी बाधा है।

सामाजिक झिझक और भय

MHM के संयुक्त सत्रों में लड़कों द्वारा मजाक उड़ाए जाने के डर से लड़कियां अक्सर खुलकर अपनी बात नहीं रख पाती हैं।

त्रि-स्तरीय समाधान रणनीति

इन गंभीर समस्याओं के समाधान के लिए बैठक में स्कूल, समुदाय और शासन — इन तीन प्रमुख स्तंभों पर एक साथ काम करने की रणनीति बनाई गई:

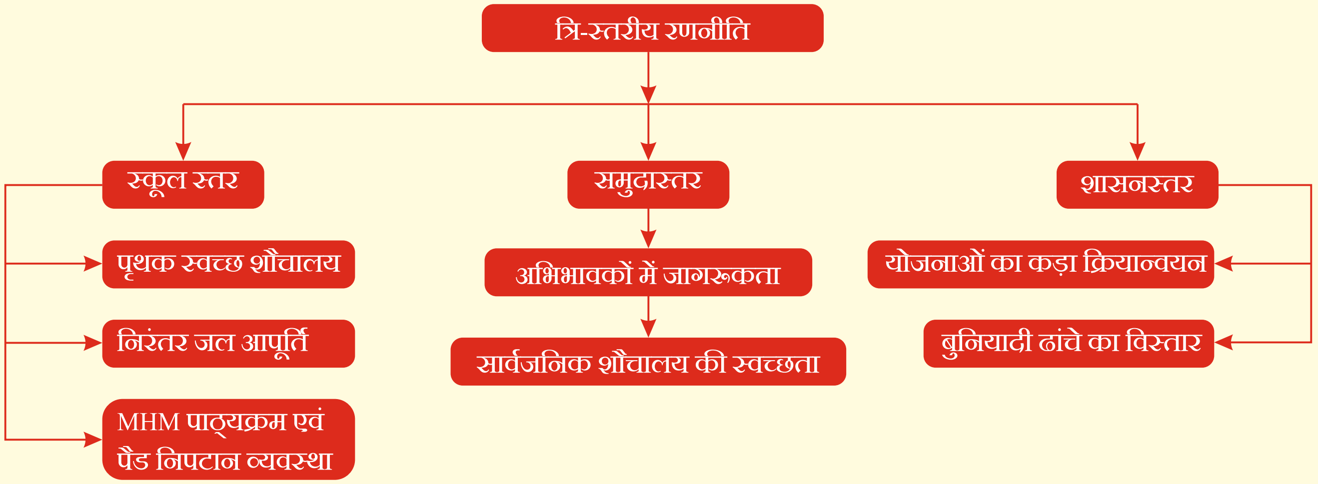

बाल संरक्षण और 'WhatsApp Support Group' का गठन

बाल संरक्षण और किशोर न्याय अधिनियम (Juvenile Justice Act) पर बात करते हुए यूनिसेफ के श्री पुरुषोत्तम ने बाल-अनुकूल केंद्रों, कानून से संघर्षरत बच्चों और रिपोर्टिंग तंत्र के बारे में जानकारी दी।

त्वरित सहायता पहल:

जमीनी स्तर पर काम कर रहे एबीजी फेलो को संवेदनशील मामलों में त्वरित मार्गदर्शन और सहायता देने के लिए यूनिसेफ और एबीजी फेलो का एक समर्पित 'WhatsApp Support Group' बनाने का निर्णय लिया गया। इसके जरिए विशेषज्ञ सलाह और रिपोर्टिंग प्रक्रिया को तेज किया जा सकेगा।

गांव-गांव पहुंचेगा 'जल सर्वेक्षण' (Village Survey)

यूनिसेफ प्रतिनिधि सुश्री श्वेता ने गांवों में पीने के पानी की उपलब्धता, बोरवेल और नल-जल कनेक्शन की स्थिति पर चर्चा की। तय किया गया कि एबीजी फेलो अपने आवंटित गांवों में एक व्यापक विलेज सर्वे चलाएंगे।

सर्वेक्षण के मुख्य बिंदु

- नल-जल योजना: कनेक्शन की स्थिति और ली जाने वाली उपभोक्ता राशि।
- तकनीकी स्थिति: जल टंकी के प्रकार और CG Swachh App का वास्तविक उपयोग।
- जन-भागीदारी 'जल वाहिनी' का गठन और उसके सदस्यों की सक्रिय भूमिका।
- गुणवत्ता जांच पीने के पानी की जांच की आवृत्ति और अपनाए जाने वाले तरीके।

उम्मीद की एक नई सुबह

सत्र का समापन एक सकारात्मक प्रतिबद्धता और सामूहिक चित्र के साथ हुआ। दोनों संस्थाओं ने एक स्वर में स्वीकार किया कि समस्या की पहचान करना पहला कदम है, लेकिन सटीक दस्तावेजीकरण, रिपोर्टिंग और निरंतर फॉलो-अप ही अंतिम व्यक्ति तक वास्तविक बदलाव पहुंचा सकता है।

यह ज्ञान-साझाकरण सत्र केवल विचारों का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि ग्रामीण भारत के बच्चों को एक स्वच्छ, सुरक्षित और सशक्त भविष्य देने की दिशा में उठाया गया एक दूरदर्शी कदम है।

डिजिटल क्रांति की ओर "संकल्प एक प्रयास" का बड़ा कदम:

'e-Merge' से जुड़े 2,220 बच्चे

ग्रामीण अंचल के बच्चों को आधुनिक तकनीक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से 'संकल्प एक प्रयास सोसाइटी' द्वारा चलाए जा रहे 'e-Merge डिजिटल लर्निंग कार्यक्रम' क्लस्टरो में एक नई उम्मीद जगाई है। अगस्त 2026 की प्रगति रिपोर्ट के अनुसार, यह अभियान अपने निर्धारित लक्ष्यों को तेजी से पूरा करने की ओर बढ़ रहा है।

संस्था ने क्लस्टरो के कुल 250 केंद्रों में डिजिटल लर्निंग शुरू करने का लक्ष्य तय किया था। प्रशासनिक स्तर पर मिली बड़ी सफलता के तहत 221 केंद्रों (88.4%) के लिए आधिकारिक अनुमति पत्र प्राप्त हो चुके हैं। शेष 29 केंद्रों (11.6%) पर स्वीकृति के लिए फॉलो-अप की प्रक्रिया जारी है।

74 केंद्रों में शुरू हुई डिजिटल कक्षाएं

अनुमति प्राप्त केंद्रों में से वर्तमान में 74 केंद्र पूरी तरह संचालित (Operational) हो चुके हैं। इन केंद्रों के माध्यम से क्षेत्र के 2,220 बच्चे सीधे तौर पर डिजिटल शिक्षा का लाभ उठा रहे हैं। प्रत्येक केंद्र में औसतन 30 बच्चे पंजीकृत होकर आधुनिक माध्यमों से पढ़ाई कर रहे हैं।

अगली प्राथमिकता: 147 नए केंद्रों का संचालन

कार्यक्रम को और अधिक विस्तार देने के लिए संस्था अब उन 147 केंद्रों पर जल्द से जल्द कक्षाएं शुरू करने की योजना बना रही है, जिनकी अनुमति पहले ही मिल चुकी है।

प्रशासनिक सहयोग और संस्था के प्रयासों से क्लस्टर के ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा का दायरा तेजी से फैल रहा है, जिससे आने वाले समय में हजारों अन्य बच्चों के लिए भी आधुनिक शिक्षा के दरवाजे खुलेंगे।

डिजिटल शिक्षा से उड़ान भर रहे ग्रामीण बच्चे:

60 कम्युनिटी सेंटरों में गूंज रही E-Udaan की कक्षाएं

ग्रामीण अंचलों में डिजिटल क्रांति अब केवल एक सपना नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत बनती नजर आ रही है। इस महीने E-Udaan पहल के तहत कुल 60 कम्युनिटी सेंटरों में डिजिटल कक्षाएं सफलतापूर्वक और नियमित रूप से संचालित की गईं। इस प्रयास का सीधा असर यह रहा कि इस माह क्षेत्र के 1,767 बच्चों को आधुनिक डिजिटल शिक्षा से जुड़ने का सीधा लाभ मिला।

गांव की चौपालों से लेकर सेंटरों तक, बच्चों में कंप्यूटर और डिजिटल माध्यमों से सीखने को लेकर भारी उत्साह देखा जा रहा है।

सामुदायिक सहयोग बना सफलता की चाबी

इस डिजिटल अभियान को घर-घर तक पहुंचाने में स्थानीय समुदाय और जनप्रतिनिधियों की भूमिका सबसे अहम रही है। ग्राम स्तर पर सरपंच, उपसरपंच और ग्राम स्तरीय शिक्षा समितियों (VLEC) के सदस्यों ने आगे बढ़कर जिम्मेदारी संभाली।

स्थानीय प्रतिनिधियों के सहयोग से न केवल सेंटरों का सुचारू संचालन सुनिश्चित हुआ, बल्कि बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति बढ़ाने के लिए अभिभावकों को भी प्रेरित किया गया। समुदाय के इस साझा प्रयास ने गांव में शिक्षा के लिए एक सकारात्मक और तकनीक-अनुकूल माहौल तैयार कर दिया है।

भविष्य की ओर मजबूत कदम

1,767 बच्चों तक डिजिटल कक्षाओं की पहुंच बनना केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि सही मार्गदर्शन और संसाधनों से ग्रामीण प्रतिभाएं किसी से पीछे नहीं हैं। E-Udaan का यह मॉडल यह साबित करता है कि जब तकनीक और समुदाय का सहयोग एक साथ मिलता है, तो बदलाव की गति दोगुनी हो जाती है।

200 केंद्रों में STEM की नई अलख:

ग्रामीण बच्चों के सीखने के स्तर में आया 30% का उछाल

"हमारे बच्चे क्या जानते हैं और उन्हें आगे बढ़ने के लिए किस सहयोग की ज़रूरत है?" इसी सोच के साथ अगस्त 2026 में SRIJAN STEM Higher Education Intervention के तहत 'STEM @ Your Doorstep' अभियान की शुरुआत की गई।

यह पहल प्रदेश के 200 कम्युनिटी लर्निंग सेंटर्स तक पहुँची, जहाँ 45 SRIJAN फेलोज ने कक्षा 9वीं और 10वीं के कुल 2,173 विद्यार्थियों (9वीं के 1,168 और 10वीं के 1,005) को STEM शिक्षा से जोड़ा।

| मूल्यांकन और प्रायोगिक शिक्षण |

अभियान की शुरुआत 'प्री-टेस्ट' से हुई ताकि बच्चों की शुरुआती समझ और लर्निंग गैप्स को पहचाना जा सके। इसके बाद फेलोज ने किताबों से इतर गतिविधि-आधारित शिक्षण पर जोर दिया:

गणित: 9वीं के बच्चों ने बीजांक व वैदिक गणित की पद्धतियों का अभ्यास किया, वहीं 10वीं के छात्रों ने बहुपद, शेषफल प्रमेय और शून्यक जैसी अवधारणाओं को समझा।

विज्ञान: 9वीं में पदार्थ, तत्व और यौगिक की बुनियादी समझ बनाई गई, जबकि 10वीं के विद्यार्थियों को अम्ल, क्षार, pH मान और अम्ल वर्षा जैसे विषयों को व्यावहारिक रूप से समझाया गया।

| परिणामों में बड़ा उछाल |

माह के अंत में आयोजित 'पोस्ट-टेस्ट' में विद्यार्थियों के प्रदर्शन में औसतन 28 से 30 प्रतिशत अंक (Percentage Points) का सुधार दर्ज किया गया:

कक्षा 9वीं: विज्ञान में प्रदर्शन ,49.24% से बढ़कर 78.49% और गणित में 48.32% से बढ़कर 78.35% हुआ।

कक्षा 10वीं: विज्ञान में अंक 50.19% से सुधरकर 78.72% और गणित में 51.00% से बढ़कर 79.01% पहुँचे।

यह सफलता साबित करती है कि सही रणनीति और गतिविधि-आधारित शिक्षण से ग्रामीण बच्चे STEM विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। सितंबर माह में भी यह अभियान लक्षित अभ्यास और सपोर्ट के साथ जारी रहेगा।

साइंस मेला:

4,747 विद्यार्थियों का प्री-टेस्ट आयोजित, अंतिम चरण में पहुँचीं तैयारियाँ

आगामी साइंस मेला (Science Mela) को अधिक प्रभावी और परिणामोन्मुख बनाने के लिए तैयारियाँ जोरों पर हैं। इसी क्रम में विद्यार्थियों के प्रारंभिक ज्ञान और विज्ञान विषय की समझ का आकलन करने के लिए एक विशेष प्री-टेस्ट (Pre-Test) का आयोजन किया गया।

सृजन 250 एलआरसी (LRC) सेंटर में आयोजित इस प्री-टेस्ट में कुल 4,747 विद्यार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा से प्राप्त आंकड़ों को सफलतापूर्वक संकलित कर लिया गया है। इस डेटा का उपयोग विद्यार्थियों के आगे के मूल्यांकन (Assessment) और उनकी सीखने की क्षमता में सुधार (Learning Improvement) की रणनीति बनाने के लिए किया जाएगा।

विज्ञान मेले की रूपरेखा को अंतिम रूप देने के लिए पुराने सेंटरों में उपलब्ध सामग्री की गहन समीक्षा की गई। उपलब्ध संसाधनों और आगामी आवश्यकताओं का सटीक मिलान करते हुए अंतिम 'मटीरियल लिस्ट' (Material List) तैयार कर ली गई है।

इस फाइनलाइज्ड मटीरियल लिस्ट के आधार पर मेले में होने वाली आगामी गतिविधियों, वैज्ञानिक प्रयोगों और प्रदर्शित किए जाने वाले साइंस मॉडल्स के लिए आवश्यक संसाधनों की विस्तृत योजना बनाई गई है। इसके साथ ही, प्रत्येक सेंटर की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सेंटर-वाइज (Center-wise) योजना तैयार कर गतिविधियों को व्यवस्थित कर दिया गया है।

आयोजकों का मानना है कि प्री-टेस्ट के डेटा और इस सुव्यवस्थित योजना से विद्यार्थियों को व्यावहारिक विज्ञान को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिलेगा।

लैंगिक समानता और सामुदायिक सशक्तिकरण की दिशा में 'गरिमा मंच' की नई पहल

अगस्त 2026 “समान अवसर, समान सम्मान और समान भागीदारी – एक सशक्त समाज की पहचान” इसी संदेश को धरातल पर उतारते हुए 'गरिमा मंच' ने अगस्त माह में जेंडर समानता और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मंच ने किशोरियों, किशोरों और महिलाओं के साथ मिलकर स्वास्थ्य, मासिक धर्म स्वच्छता, पोषण और एनीमिया जैसे गंभीर विषयों पर व्यापक जागरूकता अभियान चलाया।

गरिमा मंच का प्राथमिक उद्देश्य केवल सूचनाएं देना नहीं, बल्कि समाज में लड़के-लड़कियों के बीच समानता, निर्णय लेने की क्षमता और एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना है।

7 ब्लॉकों के 173 गांवों तक पहुंची अलख

अगस्त माह के दौरान गरिमा मंच की गतिविधियां 7 ब्लॉकों के 173 गांवों तक विस्तृत रहीं। इस दौरान कुल 445 सत्रों और गतिविधियों का सफल आयोजन किया गया, जिनमें कुल 7,255 लोगों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

महिलाएं 3,387 | किशोरियां 2,929 | किशोर 922

जेंडर समानता पर विशेष बल

इस पूरे अभियान में जेंडर समानता का मुद्दा केंद्र बिंदु रहा। इस विषय पर विशेष रूप से 229सत्र आयोजित किए गए, जिनमें 3,643 लोगों ने भाग लिया।

सत्रों के दौरान परिवारों और समाज में लड़का-लड़की को समान अवसर देने के महत्व पर विचार-विमर्श किया गया। पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं, भेदभाव, समान अधिकार, शिक्षा, निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी और सम्मानजनक व्यवहार जैसे मुद्दों पर प्रतिभागियों को जागरूक किया गया।

बदलाव की ओर बढ़ते कदम

गरिमा मंच ने किशोरियों को बिना किसी झिझक के अपनी बात रखने, सवाल पूछने और अनुभव साझा करने के लिए एक सुरक्षित मंच प्रदान किया। इसके साथ ही, समाज में स्थायी बदलाव लाने के उद्देश्य से लड़कों और महिलाओं को भी इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल किया गया, ताकि एक संवेदनशील और न्यायपूर्ण समाज की नींव रखी जा सके।

ECCE कार्यक्रम:

दुर्ग एवं राजनांदगांव जिले में तेजी से आगे बढ़ रही पहल, 1,600 से अधिक लाभार्थी

दुर्ग एवं राजनांदगांव जिले में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। कार्यक्रम के तहत दोनों जिलों में समन्वय और अनुमति की प्रक्रिया पूरी करते हुए व्यापक स्तर पर कवरेज सुनिश्चित की जा रही है।

समन्वय और मैदानी प्रगति

दुर्ग जिले में 20 से 28 अगस्त 2026 के बीच जिला कार्यक्रम अधिकारी (DPO) और विभिन्न ब्लॉक के बाल विकास परियोजना अधिकारियों (CDPO) के साथ बैठकें की गई:

20 अगस्त: DPO दुर्ग के निर्देशों के अनुसार ब्लॉक स्तरीय समन्वय शुरू हुआ।

21 से 24 अगस्त: दुर्ग ग्रामीण (6 क्षेत्र), पाटन (4 केंद्र) और जामगांव एम. (10 केंद्र) से कार्य की स्वीकृतियां प्राप्त की गई।
28 अगस्त: धमधा CDPO की अनुपलब्धता के कारण वहां की अनुमति लंबित है, जिसे जल्द पूरा किया जाएगा।

उपलब्धि और डेटा की स्थिति

26 में से 24 आंगनवाड़ी केंद्रों (92.3% कवरेज) में कार्य जारी है, जिससे कुल 912 लाभार्थी लाभान्वित हुए हैं। (4 केंद्रों का डेटा फ़ेलो की अनुपस्थिति के कारण लंबित है।)

राजनांदगांव: 30 में से 25 गांवों (83.3% कवरेज) को कवर करते हुए 708 लाभार्थियों तक पहुंच बनाई गई है। (5 गांवों का डेटा जल्द शामिल किया जाएगा।)

5 जिलों के कुल 7,272 ECCE लाभार्थियों वाले विस्तृत कार्यक्रम में दुर्ग और राजनांदगांव जिले 40% हिस्सेदारी के साथ प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं। अनुमति प्रक्रिया पूर्ण होते ही शेष क्षेत्रों को भी जल्द ही कवरेज में शामिल कर लिया जाएगा।

240 केंद्रों में गूंजी 'नवोदय' की गूंज:

मजबूत तैयारी और ट्रैकिंग सिस्टम से निखर रही ग्रामीण प्रतिभाएं

ग्रामीण बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के उद्देश्य से संचालित 'नवोदय कार्यक्रम' अगस्त 2026 में राज्य के सभी 240 केंद्रों में सफलतापूर्वक संचालित हुआ। नोडल अधिकारियों ने फेलोज को विशेष ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया, जिससे जमीनी स्तर पर शिक्षण कार्य को मजबूती मिली। इस दौरान गणित, रीजनिंग, हिंदी और ईवीएस (EVS) जैसे मुख्य विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया।

शैक्षणिक स्तर को आंकने के लिए महीने में 3 साप्ताहिक टेस्ट लिए गए। साथ ही, बच्चों की उपस्थिति और सिलेबस की निगरानी के लिए एक नया 'स्टूडेंट ट्रैकिंग सिस्टम' लागू किया गया।

मूल्यांकन रिपोर्ट में बच्चों का परिणाम औसत पाया गया है। 240 केंद्रों में ट्रैकिंग सिस्टम चालू होना और फेलोज की ट्रेनिंग पूरी होना बड़ी उपलब्धि रही, लेकिन बच्चों की नियमित उपस्थिति और स्कोर में सुधार करना मुख्य चुनौती बनी हुई है।

SANKALP
Empowering Dreams, Building Future

आगामी कार्ययोजना:

डाटा विश्लेषण
ट्रैकिंग डेटा से कमजोर विषयों और बच्चों की पहचान कर उन पर काम किया जाएगा।

रेमेडियल कक्षाएं
गणित और रीजनिंग के बेसिक कॉन्सेप्ट क्लियर करने के लिए विशेष उपचारात्मक कक्षाएं लगाई जाएंगी।

अभिभावक संपर्क
उपस्थिति बढ़ाने के लिए पालकों से सीधा समन्वय बनाया जाएगा।

ग्रामीण प्रतिभाओं की उड़ान:

MSSP कार्यक्रम से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को मिल रही नई दिशा

ग्रामीण क्षेत्रों के मेधावी विद्यार्थियों को राष्ट्रीय साधन-सह-प्रवीण छात्रवृत्ति (NMMSE), प्रयास और नवोदय जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने के उद्देश्य से 'मेरिटोरियस स्टूडेंट सपोर्ट प्रोग्राम' (MSSP) एक प्रभावी पहल के रूप में सामने आ रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य न केवल बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करना है, बल्कि चयन के बाद भी उनकी शैक्षणिक यात्रा में निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करना है।

MSSP के तहत कक्षा 8वीं के होनहार विद्यार्थियों की पहचान कर उनका Baseline Test लिया जाता है, जिससे उनके शैक्षणिक स्तर और कमजोरियों को समझा जा सके। इसके बाद NCERT पाठ्यक्रम के आधार पर वार्षिक, मासिक और साप्ताहिक योजना बनाकर विद्यार्थियों को गणित, विज्ञान, रीजनिंग और भाषा विषयों की तैयारी कराई जाती है। नियमित मॉक टेस्ट, त्रुटि विश्लेषण (Error Analysis) और विशेष रेमेडियल कक्षाओं के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, गति और सटीक समाधान (Speed and Accuracy) का विकास किया जा रहा है।

निरंतर निगरानी और अभूतपूर्व परिणाम

हालिया आंकड़ों के अनुसार, कार्यक्रम के अंतर्गत अपेक्षित 1,150 विद्यार्थियों में से 1,086 बच्चों का Baseline Data दर्ज किया जा चुका है। वहीं आयोजित Monthly Tests में मानसिक योग्यता परीक्षण (MAT) में विद्यार्थियों ने 62% और शैक्षणिक योग्यता परीक्षण (SAT) में 60% का उत्कृष्ट प्रदर्शन दर्ज किया है।

सत्र 2023-24 से 2025-26 के दौरान इस पहल से जुड़कर कुल 2,575 विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की। इनमें से 221 विद्यार्थियों का चयन NMMSE, 18 का चयन प्रयास तथा 1 विद्यार्थी का चयन नवोदय विद्यालय के लिए हुआ है।

परीक्षा में सफलता के बाद भी संगठन के फेलो (Fellows) गृह भेट (Home Visit) के माध्यम से चयनित बच्चों और उनके अभिभावकों से निरंतर संपर्क बनाए रखते हैं। इसका उद्देश्य बच्चों को छात्रवृत्ति सहायता, आगे की पढ़ाई और करियर संबंधी मार्गदर्शन देकर उनके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना है।

एनीमिया मुक्त समाज की ओर कदम:

156 गांवों में गूंजा 'स्वास्थ्य और पोषण' का संदेश (हेल्थ कैम्प)

अगस्त माह में “स्वास्थ्य एवं पोषण लिंकेज” पहल के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य की एक नई अलख जगाई गई। इस विशेष अभियान का मुख्य केंद्र “एनीमिया एवं पोषण” विषय रहा, जिसके माध्यम से समुदाय के लोगों को कुपोषण और खून की कमी जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति जागरूक किया गया।

इस पूरे अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिया के प्रमुख कारणों, उसके शुरुआती लक्षणों, रोकथाम के तरीकों और दैनिक जीवन में संतुलित व पौष्टिक आहार के महत्व को समझाना था।

अभियान की मुख्य झलकियां:

व्यापक पहुँच: इस जागरूकता अभियान के अंतर्गत कुल 156 गांवों को कवर करते हुए विविध गतिविधियों का सफल आयोजन किया गया।
युवाओं की सक्रिय भागीदारी: इन सत्रों में गांव के 3,330 किशोर-किशोरियों ने बेहद उत्साह के साथ भाग लिया और स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया।
गरिमा फेलो का सराहनीय योगदान: कार्यक्रम को धरातल पर सफल बनाने में 40 गरिमा फेलो ने मुख्य भूमिका निभाई।
सत्रों के दौरान गरिमा फेलो ने ग्रामीणों और युवाओं के बीच पहुंचकर उन्हें आयरन-फोलिक एसिड (IFA) की गोलियों के नियमित सेवन, हरी पत्तेदार सब्जियों व स्थानीय पौष्टिक खाद्य पदार्थों की उपयोगिता और एनीमिया से बचाव के व्यावहारिक उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।
इस सामुदायिक प्रयास ने न केवल युवाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति सतर्क किया, बल्कि स्वस्थ और एनीमिया-मुक्त भविष्य की मजबूत नींव भी रखी।

डिजिटल क्रांति की ओर बढ़ते कदम:
'सृजन' कार्यक्रम से संवर रहा ग्रामीण बच्चों का भविष्य (कंप्यूटर शिक्षा)

ग्रामीण और संसाधनों से वंचित बच्चों को तकनीक की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संचालित 'सृजन' कार्यक्रम के तहत कंप्यूटर शिक्षा और डिजिटल साक्षरता अभियान नए आयाम छू रहा है। छठवी से दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं को कंप्यूटर, एमएस ऑफिस, इंटरनेट, डिजिटल सुरक्षा और बुनियादी तकनीकी कौशल में निपुण बनाने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम तेजी से विस्तार कर रहा है।

हाल ही में सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत 21 नए कंप्यूटर सेंटर शुरू किए गए हैं। इस विस्तार को गति देने के लिए 3 नई जगहों से आधिकारिक अनुमति पत्र (परमिशन लेटर) प्राप्त किए गए हैं। नए सत्र की शुरुआत में सेंटरों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए कंप्यूटर रिपेयरिंग का कार्य प्राथमिकता से पूरा किया गया, ताकि बच्चों की पढ़ाई में कोई बाधा न आए।

समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 18 अलग-अलग स्थानों पर ग्रामीणों और अभिभावकों के साथ बैठकें आयोजित की गईं। इस बीच, देवादा गांव से एक सराहनीय पहल सामने आई है—वहां के सरपंच ने स्थानीय गाँव के बच्चों के लिए 4 नए कंप्यूटर प्रदान किए हैं। इन सेंटरों पर बच्चों को मार्गदर्शन देने के लिए 'संकल्प एक प्रयास' संस्था के शिक्षक नियमित रूप से सेवाएं दे रहे हैं।

| सृजन कार्यक्रम का प्रभाव आंकड़ों में भी साफ नजर आ रहा है: |

सेंटरों की संख्या में बढ़ोतरी: पिछले वर्ष जहाँ 16 स्थानों पर कंप्यूटर शिक्षा संचालित की जा रही थी, वहीं इस वर्ष यह संख्या बढ़कर 21 हो गई है।

छात्राओं की बढ़ती भागीदारी: बीते वर्ष कार्यक्रम से 958 छात्राएं जुड़ी थीं, जो इस वर्ष बढ़कर 1500 हो गई हैं।

तकनीकी शिक्षा का यह विस्तार न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल खाई को पाट रहा है, बल्कि बेटियों को भी आधुनिक युग के नए अवसरों से जोड़कर उनके सशक्तिकरण की नई गाथा लिख रहा है।

डिजिटल क्रांति की ओर ग्राम देवादा:
सरपंच और "संकल्प एक प्रयास की अनुठी पहल"

ग्राम पंचायत देवादा में शिक्षा और तकनीक का एक सुंदर संगम देखने को मिल रहा है, जहाँ ग्राम पंचायत की सरपंच और 'संकल्प एक प्रयास' संस्था के साझा प्रयासों से बच्चों के लिए कंप्यूटर कक्षाओं का सफल संचालन किया जा रहा है।

ग्रामीण अंचल के बच्चों को डिजिटल दुनिया से जोड़ने के लिए ग्राम पंचायत देवादा की सरपंच ने सराहनीय सहयोग प्रदान किया है। पंचायत भवन में न केवल कंप्यूटर कक्षा के लिए एक समर्पित कमरा उपलब्ध कराया गया है, बल्कि बच्चों के अभ्यास के लिए 4 कंप्यूटर भी उपलब्ध कराए गए हैं। जनप्रतिनिधियों का यह सकारात्मक दृष्टिकोण ग्रामीण बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रख रहा है।

इस पहल को धरातल पर उतारने और निखारने का कार्य 'संकल्प एक प्रयास' संस्था द्वारा निष्ठापूर्वक किया जा रहा है।

LRC कक्षा और कंप्यूटर कक्षा पास-पास संचालित होने के कारण LRC में आने वाले बच्चे भी सहजता से इन कक्षाओं से जुड़ रहे हैं। 'संकल्प एक प्रयास' की शिक्षिका द्वारा बच्चों को कंप्यूटर का बुनियादी एवं व्यावहारिक ज्ञान अत्यंत सरल तरीके से दिया जा रहा है, जिससे बच्चों के भीतर तकनीकी समझ, डिजिटल साक्षरता और सीखने की क्षमता का तेजी से विकास हो रहा है।

सरपंच महोदया का दूरदर्शी सहयोग और 'संकल्प एक प्रयास' की शिक्षिका का डिजिटल शिक्षा के प्रति यह समर्पण देवादा के बच्चों को आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने और उनके सपनों को नई उड़ान देने में मील का पत्थर साबित हो रहा है।

सीख पीयर लर्निंग:
ग्रामीण बच्चों की गणित सुधार रहे शिक्षा मित्र

छत्तीसगढ़ । बुनियादी शिक्षा और गणित को मजबूत करने के लिए 'सीख' कार्यक्रम के तहत 'पीयर लर्निंग' पहल शुरू की गई है। अगस्त में 240 केंद्रों में शिक्षा मित्रों का पंजीकरण और ओरिएंटेशन कर उन्हें उनकी भूमिकाओं से अवगत कराया गया।

TLM और स्थानीय भाषा से पढ़ाई

शिक्षकों के सहयोग से लर्नर्स (शिक्षार्थियों) के ग्रुप बनाए गए। शिक्षा मित्रों ने गणित के कठिन विषयों को TLM (टीचिंग-लर्निंग मटेरियल) और अपनी स्थानीय भाषा में मनोरंजक गतिविधियों के माध्यम से समझाया।

बहुस्तरीय मूल्यांकन

शिक्षा मित्र: शिक्षकों और फ़ेलोज़ द्वारा 'पीयर लॉग बुक' के जरिए 10 के स्केल पर 5 मापदंडों (Communication, Collaboration, Critical Thinking, Problem Solving, Confidence) पर मूल्यांकन किया गया। कुल शिक्षा मित्र – 596

लर्नर्स: शिक्षार्थियों की प्रगति का आकलन उनके मंथली टेस्ट के अंकों के आधार पर हुआ।

सीख LRC:
एक अनोखी शिक्षण क्रांति

ग्रामीण इलाकों में बच्चों के लिए शिक्षा को रुचिकर और सुलभ बनाने के उद्देश्य से 'सीख LRC' (Learning Resource Center)की शुरुआत की गई। इसका मुख्य लक्ष्य बच्चों को रटाने के बजाय उनका सर्वांगीण (शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक) विकास करना है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **Active Constructive Methodology** — पारंपरिक पढ़ाई के बजाय 'खुद करके सीखने' पर ज़ोर।
- **खेल और गतिविधियाँ** — खेल-खेल में गणित और विज्ञान के कठिन सिद्धांतों को आसान बनाना।
- **TLM और Visual माध्यम** — शिक्षण सामग्री और दृश्यात्मक साधनों के उपयोग से अवधारणाओं की स्पष्ट समझ।

प्रभाव और उपलब्धि:

कुल 250 LRC में से 248 केंद्र वर्तमान में गाँव-गाँव में सक्रियता से संचालित हैं।

इस पहल की पहुँच 16,858 सीख स्कूलों तक पहुँची है, जिससे 11,239 बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

'सीख LRC' ने साबित कर दिखाया है कि सीखने के तरीके में बदलाव लाकर बच्चों में आत्मविश्वास और सीखने का एक नया नज़रिया पैदा किया जा सकता है।

उम्मीद की नई किरण:
सृजन 'शिक्षा मित्र' बनकर बच्चे खुद गढ़ रहे हैं अपना और साथियों का भविष्य

"जब दोस्त पढ़ाता है, तो पढ़ाई बोझ नहीं, बल्कि एक खेल बन जाती है।" इसी भावना को साकार कर रहा है 'शिक्षा मित्र' कार्यक्रम, जिसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में सहपाठी शिक्षण (Peer Learning) को बढ़ावा देना और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आनंददायक बनाना है। इस अनोखी पहल के तहत पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को 'शिक्षा मित्र' के रूप में तैयार किया जाता है, जो गणित और विज्ञान जैसे कठिन माने जाने वाले विषयों को समझने में अपने सहपाठियों का हाथ थामते हैं।

अगस्त माह सृजन में जुड़ा 1202 नए 'शिक्षा मित्रों' का कुनबा

इस दिशा में अगस्त का महीना बेहद खास और उपलब्धियों से भरा रहा। इस महीने कुल 1202 बच्चों का गणित और विज्ञान विषय के लिए 'शिक्षा मित्र' के रूप में पंजीयन किया गया। पंजीयन के बाद सभी बच्चों के लिए एक विशेष ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें उन्हें शिक्षा मित्र की भूमिका, सहपाठी शिक्षण के तरीकों और दूसरों की मदद करने के फायदों के बारे में बारीकी से समझाया गया।

विभिन्न अध्ययन केंद्रों पर इस कार्यक्रम को उत्सव की तरह मनाया गया। ओरिएंटेशन और सेलिब्रेशन के दौर के बाद, इन नन्हे शिक्षा मित्रों ने पूरे उत्साह के साथ अपने साथियों को पढ़ाना शुरू किया। नियमित रूप से आयोजित गतिविधियों के जरिए बच्चों ने खेल-खेल में गणित के उलझे हुए सवालों को सुलझाया और विज्ञान के जटिल सिद्धांतों को समझा।

बदलाव के सकारात्मक नतीजे
इस जमीनी प्रयास के शानदार परिणाम सामने आ रहे हैं:

शैक्षणिक सुधार: गणित और विज्ञान विषय में बच्चों की समझ और सीखने के स्तर में उल्लेखनीय सुधार आया है।

व्यक्तित्व विकास: साथियों को पढ़ाने से 'शिक्षा मित्रों' के भीतर नेतृत्व क्षमता (Leadership) और आत्मविश्वास में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है।

सामाजिक मूल्य: बच्चों में आपस में सहयोग, जिम्मेदारी और सामूहिक रूप से आगे बढ़ने की भावना मजबूत हुई है।

अगस्त माह की यह सफलता यह साबित करती है कि 'शिक्षा मित्र' कार्यक्रम केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, **बल्कि यह बच्चों में नेतृत्व, जिम्मेदारी और दोस्ती की नई मिसाल कायम कर रहा है।**

सीख केंद्रों में शिक्षा और संस्कृति के संगम से निखरी बाल प्रतिभा (Holistic Development)

'संकल्प एक प्रयास' के 'सीख' (Seekh) कार्यक्रम के तहत अगस्त माह में प्रदेश के २५० गाँवों के 'सीख LRCs' में बच्चों के समग्र विकास (Holistic Development) के लिए विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस दौरान हरेली, स्वतंत्रता दिवस और रक्षाबंधन जैसे पर्वों को बच्चों की सक्रिय सहभागिता, सांस्कृतिक समझ और रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ मनाया गया।

सीख केंद्रों में कक्षा शिक्षण को दिलचस्प बनाने के लिए विषयों का अनूठा एकीकरण (Integration) किया गया:

Art & Craft: 'Colour Integration' के माध्यम से बच्चों ने रंगों द्वारा अभिव्यक्ति सीखी।

SEL: "मैं खास हूँ – मेरी खूबियाँ" सत्र से बच्चों में आत्मविश्वास और स्व-पहचान का विकास हुआ।

Library & EVS: पुस्तकालय सत्रों को पर्यावरण अध्ययन से जोड़कर पढ़ने की रुचि और विषय समझ बढ़ाई गई।

EVS & Music: "पर्यावरण संरक्षण" और "Sounds of Nature" गतिविधियों के जरिए बच्चों ने संगीत के माध्यम से प्रकृति की ध्वनियों को महसूस किया।

इन पहलों का उद्देश्य शिक्षा को केवल पढ़ाई तक सीमित न रखकर बच्चों के सोचने, महसूस करने और पर्यावरण से जुड़ने की एक सतत प्रक्रिया बनाना है। यह प्रयास ग्रामीण बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है।

SEEKH PTM:

जब घर-परिवार और केंद्र एक साथ आए, तो बच्चों की राह हुई आसान

सीख (SEEKH) प्रोग्राम के अंतर्गत संचालित 250 लर्निंग रिसोर्स सेंटर्स (LRC) में हाल ही में 10 -दिवसीय पैरेंट-टीचर मीटिंग (PTM) का विशेष आयोजन किया गया। यह केवल केंद्रों तक सीमित बैठक नहीं थी, बल्कि शिक्षकों ने खुद कदम बढ़ाकर 'होम एंड वर्कप्लेस विजिट्स' के जरिए भी अभिभावकों से सीधा संवाद साधा। इस 10-दिवसीय अभियान के तहत कुल 6,156 परिवारों तक पहुँच बनाई गई।

इस दौरान बच्चों की पढ़ाई, उनकी उपस्थिति, लर्निंग लेवल, गृहकार्य और उनके व्यवहार जैसे अहम मुद्दों पर खुलकर चर्चा हुई। जो बच्चे नवोदय परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, उनकी तैयारी को लेकर अभिभावकों का मार्गदर्शन किया गया। शिक्षकों ने हर बच्चे की व्यक्तिगत प्रगति का आकलन करते हुए आवश्यकतानुसार 'चाइल्ड-वाइज फॉलो-अप' और सपोर्ट एक्शन तय किए।

इस पहल ने LRC, बच्चे और अभिभावकों के बीच के जुड़ाव को एक नया बल दिया है। अब माता-पिता न सिर्फ बच्चों की पढ़ाई में ज्यादा रुचि ले रहे हैं, बल्कि केंद्रों में बच्चों की नियमित उपस्थिति और सीखने की निरंतरता भी पहले से कहीं अधिक बेहतर नजर आ रही है।

सृजन LRC:

गतिविधि आधारित शिक्षा से संवर रहा 8, 891 ग्रामीण बच्चों का भविष्य

ग्रामीण बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सर्वांगीण शिक्षा देने के लिए संचालित 'सृजन' लर्निंग रिसोर्स सेंटर (LRC) में 'एक्टिव कंस्ट्रक्टिव मेथड' से पढ़ाई कराई जा रही है। पारंपरिक रटंत प्रणाली के बजाय यहाँ खेल-कूद, टीएलएम (TLM), विजुअलाइजेशन, मॉडल मेकिंग और 'स्वयं अनुभव करके सीखने' (Learning by Doing) के अवसर दिए जा रहे हैं, जिससे बच्चों की समझ गहरी हो रही है।

हाल ही में आयोजित अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM) में साझा किए गए प्रमुख आँकड़े:

सृजन LRC से लाभान्वित कुल बच्चे:	संचालित (Run) LRC केंद्र:	सक्रिय शिक्षिकाएं:
8,891	248 (कुल 250)	452

ग्राउंड लेवल पर 452 समर्पित शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में ये 248 केंद्र ग्रामीण शिक्षा के परिदृश्य को बदलने और बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अभिभावकों के साथ जुड़ाव से मजबूत हो रही शिक्षा की नींव:

'सृजन' केंद्रों में अगस्त PTM संपन्न

सामुदायिक सहभागिता और बेहतर शिक्षा के संकल्प को साकार करते हुए 'सृजन' के अंतर्गत अगस्त माह की अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM) दो चरणों में संपन्न हुई। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों की शैक्षणिक प्रगति साझा करना, कम सीखने वाले बच्चों के लिए सुधार योजना बनाना और नियमित उपस्थिति को बढ़ावा देना था।

प्रथम चरण में अभिभावकों को LRC केंद्र पर आमंत्रित किया गया, जबकि दूसरे चरण में अनुपस्थित अभिभावकों से उनके घर या कार्यस्थल पर जाकर संवाद स्थापित किया गया।

प्रमुख उपलब्धियाँ:
कुल केंद्र: 248

केंद्र पर आयोजित PTM:
152 केंद्रों पर 2,609 बच्चों के अभिभावकों से चर्चा।

गृह/कार्यस्थल भ्रमण:
165 स्थानों पर जाकर 2,460 अभिभावकों से मुलाकात

बैठक के दौरान कार्यस्थल की व्यस्तता, बच्चों की अनियमित उपस्थिति और गाँव के छोर पर स्थित केंद्रों तक पहुँचने जैसी चुनौतियाँ भी सामने आईं। इसके बावजूद, इस पहल ने परिवार और समुदाय की सहभागिता को मजबूत कर बच्चों की शिक्षा का मार्ग अधिक सुगम बनाया है।

अगस्त 2026:

सामुदायिक सहभागिता से मजबूत हुई गाँव के बच्चों की शिक्षा (VLEC)

अगस्त 2026 में विलेज लेवल एजुकेशन कमेटी (VLEC) की सक्रियता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा के प्रति सामुदायिक जिम्मेदारी का एक नया रूप देखने को मिला। जुलाई की तुलना में इस माह VLEC बैठकों में भारी उछाल दर्ज किया गया, जिससे स्थानीय स्तर पर शिक्षा व्यवस्था में सुधार की गति तेज हुई है।

इस महीने VLEC बैठकों को लेकर कुल 279 प्रतिक्रियाएँ मिलीं, जिनके आधार पर रिकॉर्ड 261 सफल बैठकों का आयोजन किया गया (जुलाई में यह संख्या 204 थी)। बैठकें आयोजित न हो पाने के मामलों में भी गिरावट आई और यह संख्या 33 से घटकर महज 14 रह गई।

विभिन्न कार्यक्रमों के तहत बैठकों का आयोजन:

SEEKH: **120 बैठकें**

SRIJAN: **111 बैठकें**

GARIMA: **30 बैठकें**

बैठकों में ग्रामीणों ने बच्चों की नियमित उपस्थिति, पढ़ाई के स्तर में सुधार और डिजिटल शिक्षा जैसे अहम विषयों पर खुलकर चर्चा की। तमोरा, मोरीद, सुखरी, बघेरा और मुदपार जैसे गाँवों में समुदाय ने आगे बढ़कर स्वामित्व की मिसाल पेश की—जहाँ बिजली, भवन, डिजिटल शिक्षा (ई-मर्ज) के स्थान और अन्य संसाधनों की कमी को गाँव वालों ने मिलकर दूर किया।

हालांकि सदस्यों की अनियमित उपस्थिति, अभिभावकों की सीमित सहभागिता और कमजोर बच्चों को अतिरिक्त शैक्षणिक मदद की जरूरत जैसी चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। फिर भी, नियमित फॉलो-अप और बेहतर समन्वय के बल पर VLEC ने गाँव की शिक्षा को एक नई दिशा दी है।

अगस्त में दिखा बदलाव:

SMC और समुदाय के सहयोग से बदली स्कूलों की तस्वीर

अगस्त 2026 में 'SEEKH' पहल के तहत स्कूल प्रबंधन समितियों (SMC) और समुदाय ने मिलकर सरकारी स्कूलों में शिक्षा और व्यवस्था को बेहतर बनाने की एक शानदार मिसाल पेश की।

इस महीने 157 स्कूलों से मिली रिपोर्ट में सामने आया कि 117 SMCs पूरी तरह सक्रिय हैं और अपनी जिम्मेदारियों को मुस्तैदी से निभा रही हैं। बैठकों के जरिए न सिर्फ स्कूल प्रबंधन को मजबूत किया गया, बल्कि 69 स्कूलों में अभिभावकों की भागीदारी भी काफी मजबूत देखने को मिली।

शिक्षकों और SMC के साझा प्रयासों से 146 स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति की नियमित समीक्षा की गई, जिससे अनुपस्थित रहने वाले बच्चों की पहचान कर उन्हें दोबारा स्कूल से जोड़ना आसान हुआ। इतना ही नहीं, 146 स्कूलों में ग्रामीणों और स्थानीय समुदाय ने खुद आगे आकर स्कूल की व्यवस्थाओं में अपना मालिकाना हक (Community Ownership) जताया।

सुविधाओं और डिजिटल शिक्षा पर जोर

पढ़ाई का नया तरीका: 36 स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई को मजेदार बनाने के लिए लाइब्रेरी, TLM (शिक्षण सामग्री) और डिजिटल टूल्स का एक साथ इस्तेमाल शुरू हुआ।

बुनियादी व्यवस्थाएं: 95 स्कूलों में बच्चों के लिए स्वच्छ शौचालय, साफ पीने का पानी, मध्याह्न भोजन (MDM) और डस्टबिन जैसी सभी जरूरी सुविधाएं दुरुस्त पाई गई।

आगामी महीनों में महिला भागीदारी, शासन की गुणवत्ता और अभिभावकों के जुड़ाव को और बेहतर करने के लिए नई कार्ययोजना तैयार कर ली गई है। SMC का यह प्रयास साबित कर रहा है कि जब समाज और स्कूल एक साथ आते हैं, तो बच्चों को एक बेहतरीन और सुरक्षित शैक्षणिक माहौल मिलना तय हो जाता है।

हरेली तिहार:

बच्चों के संग जीवंत हुई छत्तीसगढ़ की माटी, परंपरा और संस्कृति

छत्तीसगढ़ के प्रथम लोक पर्व 'हरेली' (सावन अमावस्या) के अवसर पर 'संकल्प एक प्रयास' संस्था द्वारा संचालित 250 'सीख' व 'सृजन' लर्निंग सेंटरों में "हमर हरेली – हमर प्रकृति, हमर खेती, हमर संस्कृति" विशेष कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। इसमें कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी लोक-संस्कृति और परंपराओं को जीवंत कर दिया।

कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियाँ:

कृषि, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक समझ: बच्चों को हरेली के सांस्कृतिक महत्व के साथ-साथ नीम के औषधीय गुणों और वर्षा ऋतु चक्र के वैज्ञानिक कारणों की जानकारी दी गई। बच्चों ने नांगर, हल, कुदाल और हँसिया जैसे पारम्परिक कृषि उपकरणों की पहचान की।

कबाड़ से जुगाड़ व रचनात्मकता: बच्चों ने नीम की पत्तियों से सुंदर कलाकृतियाँ बनाई, कबाड़ से जुगाड़ तकनीक का उपयोग कर वेस्ट मटेरियल से पारंपरिक मॉडल व सामग्री तैयार की, तथा प्रकृति व कृषि-पशुधन के सुंदर चित्र उकेरे।

पेड़-पौधे एवं पर्यावरण संरक्षण: पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जनप्रतिनिधियों, सरपंचों व मुख्य अतिथियों के साथ मिलकर पौधरोपण किया गया। बच्चों ने पौधों को गोद लेकर उनकी नियमित देखभाल करने का संकल्प लिया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ व पारंपरिक खेल: पारंपरिक छत्तीसगढ़ी वेशभूषा में सजे बच्चों ने लोकगीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। साथ ही गेड़ी संतुलन खेल, स्थानीय व्यंजनों (चीला) पर चर्चा और लोक-संस्कृति के प्रति गर्व महसूस कराने वाली गतिविधियों के साथ आयोजन संपन्न हुआ।

'संकल्प एक प्रयास' के सीख व सृजन केंद्रों में रक्षाबंधन

27 अगस्त 2026 को 'संकल्प एक प्रयास' के सीख व सृजन केंद्रों में रक्षाबंधन पर्व “मेरी राखी – मेरा रिश्ता” थीम के तहत धूमधाम से मनाया गया। इस डेढ़ घंटे के कार्यक्रम में बच्चों, शिक्षकों और वीएलईसी (VLEC) सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

प्रमुख गतिविधियाँ व आकर्षण:

उद्देश्य: बच्चों में आपसी प्रेम, सम्मान, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना।

रचनात्मकता: बच्चों ने वेस्ट मटेरियल, ऊन, कागज और मोतियों का उपयोग कर खुद सुंदर राखियाँ बनाईं।

अनुभव साझा: वीएलईसी सदस्यों ने बचपन की यादें व स्थानीय परंपराएँ बच्चों के साथ साझा कीं।

संकल्प व सुरक्षा: बच्चों ने एक-दूसरे को राखी बाँधी और समाज के हर व्यक्ति का सम्मान व सहयोग करने की प्रतिज्ञा ली।

समापन: बच्चों की राखियों की प्रदर्शनी लगाई गई और सामूहिक तस्वीरों के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

संकल्प से बदलाव:

नन्हे हाथों में तिरंगा, मंच पर गूंजी महिला सशक्तिकरण की आवाज

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर 'संकल्प एक प्रयास' संस्था के केंद्रों ('सीख/LRC', 'सृजन' और 'गरिमा मंच') में देशभक्ति और सामाजिक बदलाव का विशेष आयोजन हुआ।

बाल कला और संकल्प का संगम

संस्था के 250 केंद्रों पर "मेरा तिरंगा, मेरी पहचान" थीम के तहत बच्चों ने अपने हाथों से बने तिरंगे बैज, कागज़ के फूल और कार्ड्स से अतिथियों का स्वागत किया। 'Tiranga Creativity Showcase' में बच्चों ने कला का प्रदर्शन किया और स्वतंत्रता दिवस के समूह नृत्य पर थिरके। "Nation Promise Circle" के दौरान बच्चों ने पढ़ाई जारी रखने, स्वच्छता, वृक्षारोपण और सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा का संकल्प लिया।

SANKALP
• Empowering Dreams, Building Future •

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज”

फेलोशिप प्रोग्राम	सीख : प्रोग्राम	सृजन: प्रोग्राम	गरिमा : प्रोग्राम
ABG Fellows 25	सामुदायिक शिक्षक 491	सामुदायिक शिक्षक 452	गरिमा मंच 524 (8399 प्रतिभागी)
Seekh Fellows 06	लर्निंग रिसोर्स सेंटर 249 (11556 छात्र)	लर्निंग रिसोर्स सेंटर 248 (8891 छात्र)	विलेज लेवल शिक्षा समिति 228
Srijan Fellows 6	विलेज लेवल शिक्षा समिति (ABG सपोर्ट समूह) 228	ई-उड़ान (डिजिटल कक्षाएं) 1767	ECCE 7272
Garima Fellows 03	सीख पीयर लीडर 596	विलेज लेवल शिक्षा समिति 228	
Trainee Seekh Fellows 44	सहभागी पालक 2868	सृजन पीयर लीडर 1202	
Trainee Srijan Fellows 36	होम विजिट 3076	NMMSE प्रयासरत छात्र 1150	
Trainee Garima Fellows 39	नवोदय छात्राएं 1793	सहभागी पालक 2394	
		स्टेम वर्कशॉप 2173	
		कंप्यूटर लैब 20 (1497 छात्र)	
		होम विजिट 2562	

अगस्त 2026 का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय और सामाजिक बदलाव का नया मील का पत्थर साबित हुआ है। जब मैं इस पूरे महीने की उपलब्धियों पर नज़र डालता हूँ, तो मुझे केवल गतिविधियाँ नहीं, बल्कि ग्रामीण अंचल के बच्चों, किशोरियों और महिलाओं के चेहरों पर झलकता नया आत्मविश्वास और मुस्कुराते हुए सपने नज़र आते हैं।हिवरे बाजार एवं रालेगण सिद्धि के ऐतिहासिक एक्सपोजर विजिट से प्राप्त 'आनंदी कुटुंब से समृद्ध ग्राम' की प्रेरणा ने हमारे 'आदर्श बाल ग्राम' (ABG) के विजन को एक नई दिशा दी है। इस दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ाते हुए, 'गरिमा परियोजना' का विस्तार अब राजनांदगांव और दुर्ग जिले के 56 आंगनवाड़ी केंद्रों तक हो चुका है, जहाँ ECCE के माध्यम से हमारे नौनिहालों के बचपन को संवारा जा रहा है। बाल संरक्षण, MHM और WASH जैसे बुनियादी विषयों पर यूनिसेफ (UNICEF) के साथ हमारी साझा साझेदारी इस यात्रा को और अधिक मजबूती प्रदान कर रही है।तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में, 'e-Merge' और 'E-Udaan' के माध्यम से हजारों ग्रामीण बच्चे डिजिटल शिक्षा से जुड़ रहे हैं। 'STEM @ Your Doorstep' अभियान के अंतर्गत 200 केंद्रों में बच्चों के लर्निंग लेवल में आया 30% का उछाल और आगामी साइंस मेले के लिए 4,747 विद्यार्थियों का प्री-टेस्ट हमारी शैक्षणिक गुणवत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके साथ ही, 'गरिमा मंच' के माध्यम से 173 गांवों तक जेंडर समानता और स्वास्थ्य की गूँज पहुँची है, जबकि 156 गांवों में एनीमिया जागरूकता अभियान चलाकर स्वस्थ समाज की नींव रखी गई है।हमारे शिक्षण कार्यक्रमों—'नवोदय', 'MSSP' , 'सीख' एवं 'सृजन' LRCs में एक्टिव लर्निंग, 'शिक्षा मित्र' (Peer Learning), PTM और VLEC/SMC बैठकों के ज़रिए सामुदायिक सहभागिता को अभूतपूर्व बल मिला है। 'सृजन' के तहत 21 कंप्यूटर सेंटरों के विस्तार से बेटियां भी डिजिटल युग से सशक्त हो रही हैं।स्वतंत्रता दिवस पर नन्हे हाथों में लहराता तिरंगा, रक्षाबंधन पर "मेरी राखी – मेरा रिश्ता" का संकल्प, और हरेली तिहार में छत्तीसगढ़ी संस्कृति का सुंदर संगम यह दर्शाते हैं कि हमारी जड़ें शिक्षा के साथ-साथ मूल्यों से भी सिंचित हो रही हैं।हमारी यात्रा लंबी है, लेकिन हमारे हौसले बुलंद हैं। आइए, हम सब मिलकर शिक्षा, स्वावलंबन और समरसता की इस मशाल को हर उस घर तक पहुँचाएँ जहाँ उजाले की आवश्यकता है।सस्नेह और शुभकामनाओं सहित,

परिमल सिन्हा,
संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org
Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS